

अटलांटिक महासागर की जलधाराएं

(Current of the Atlantic Ocean)

महासागरीय जलधाराएं खगोलीय, वायुमंडलीय और अन्तः समुद्री एवं स्थलाकृतिक कारकों के अंतर्क्रिया के फलस्वरूप क्षैतिज एवं उर्ध्वाधर रूप से प्रवाहित होते हुए जलीय परिसंचरण प्रणाली का विकास करती है। हम यहां अटलांटिक महासागर की जलधारा (Current of the Atlantic Ocean) के बारे में बात करेंगे।

अटलांटिक महासागर की जलधाराएं:-

अटलांटिक महासागर विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महासागर (Second largest ocean on the world) है। यह अंग्रेजी अक्षर (S) की तरह दिखाई देता है तथा दोनों ध्रुवों की ओर खुला हुआ है। यह उत्तर एवं दक्षिण में अधिक चौड़ी तथा मध्य में अपेक्षाकृत संकरी है। इसके मध्यवर्ती भाग में कटक तथा तटवर्ती भाग में खाड़िया तथा कई द्वीप हैं। ये यहाँ की भौतिक, भौगोलिक स्थिति को विशिष्ट बनाती है जिसका प्रभाव जलधाराओं पर पड़ता है।

अन्ध महासागर की धाराओं की मुख्य विशेषता यह है कि विषुवत रेखा के दोनों ओर इन धाराओं का क्रम प्रायः समान है। अन्ध महासागर की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित हैं-

उत्तरी विषुवतरेखीय गर्म धारा North Equatorial Warm Current- अन्ध महासागर में विषुवत रेखा के उत्तर में उत्तर-पूर्वी सन्मार्गी पवनों के द्वारा एक उष्ण जलधारा प्रवाहित होती है जो विषुवत रेखा के उष्ण जल को पूर्व से पश्चिम को धकेलती है। यही उत्तरी विषुवतरेखीय गर्म जलधारा कहलाती है। कैरेबियन सागर में इस जलधारा के दो भाग हो जाते हैं, जो कि पश्चिमी द्वीपों के कारण होते हैं। एक शाखा उत्तर की ओर अमरीका के पूर्वी तट के साथ बहकर गल्फस्ट्रीम में मिल जाती है और दूसरी शाखा दक्षिण की ओर चलकर मैक्सिको की खाड़ी में पहुँच जाती है।

गल्फस्ट्रीम या खाड़ी की गर्म धारा Gulf stream- इसकी उत्पत्ति मैक्सिको की खाड़ी से होती है, इसलिए इसे खाड़ी की धारा कहा जाता है। यहाँ यह लगभग कई किलोमीटर गहरी, 49 किलोमीटर चौड़ी होती है और इसकी गति लगभग 5 किलोमीटर प्रति घण्टा तथा तापमान 28° सेण्टीग्रेड होता है। यह जलधारा फ्लोरिडा जल सन्धि से निकलकर उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट के साथ-साथ उत्तर की ओर बहती है। हैलीफैक्स के दक्षिण से इसका प्रवाह पूर्णतः पूर्व की ओर

हो जाता है। वहाँ से इसे पच्छिमा पवनें आगे बहा ले जाती हैं। 45° पश्चिमी देशान्तर के निकट इसकी चौड़ाई बहुत बढ़ जाती है, जिससे धारा के रूप में इसका स्वरूप बिल्कुल बदल जाता है। फलतः यहाँ उसका नाम उत्तरी अटलांटिक प्रवाह (North Atlantic drift) पड़ जाता है। यही प्रवाह फिर पश्चिमी यूरोप में नार्वे की ओर चला जाता है और उत्तरी ध्रुव सागर में विलीन हो जाता है। गल्फस्ट्रीम में दक्षिणी विषुवत रेखीय धारा के जल का एक भाग आकर मिलने से ही इसकी शक्ति क्षमता बढ़ जाती है।

कनारी की ठण्डी धारा Canary Current- उत्तरी अटलांटिक प्रवाह स्पेन के निकट दो शाखाओं में बंट जाता है। एक शाखा उत्तर की ओर चली जाती है और दूसरी दक्षिण की ओर मुड़कर स्पेन, पुर्तगाल तथा अफ्रीका के उत्तरी पश्चिमी तट के सहारे बहती है। यहाँ यह कनारी द्वीप के पास जाकर निकलती है, अतः इसका नाम कनारी धारा पड़ गया है। यहाँ सन्मार्गी पवनों के प्रभाव में आ जाने से धारा पुनः विषुवतरेखीय धारा के साथ विलीन हो जाती है।

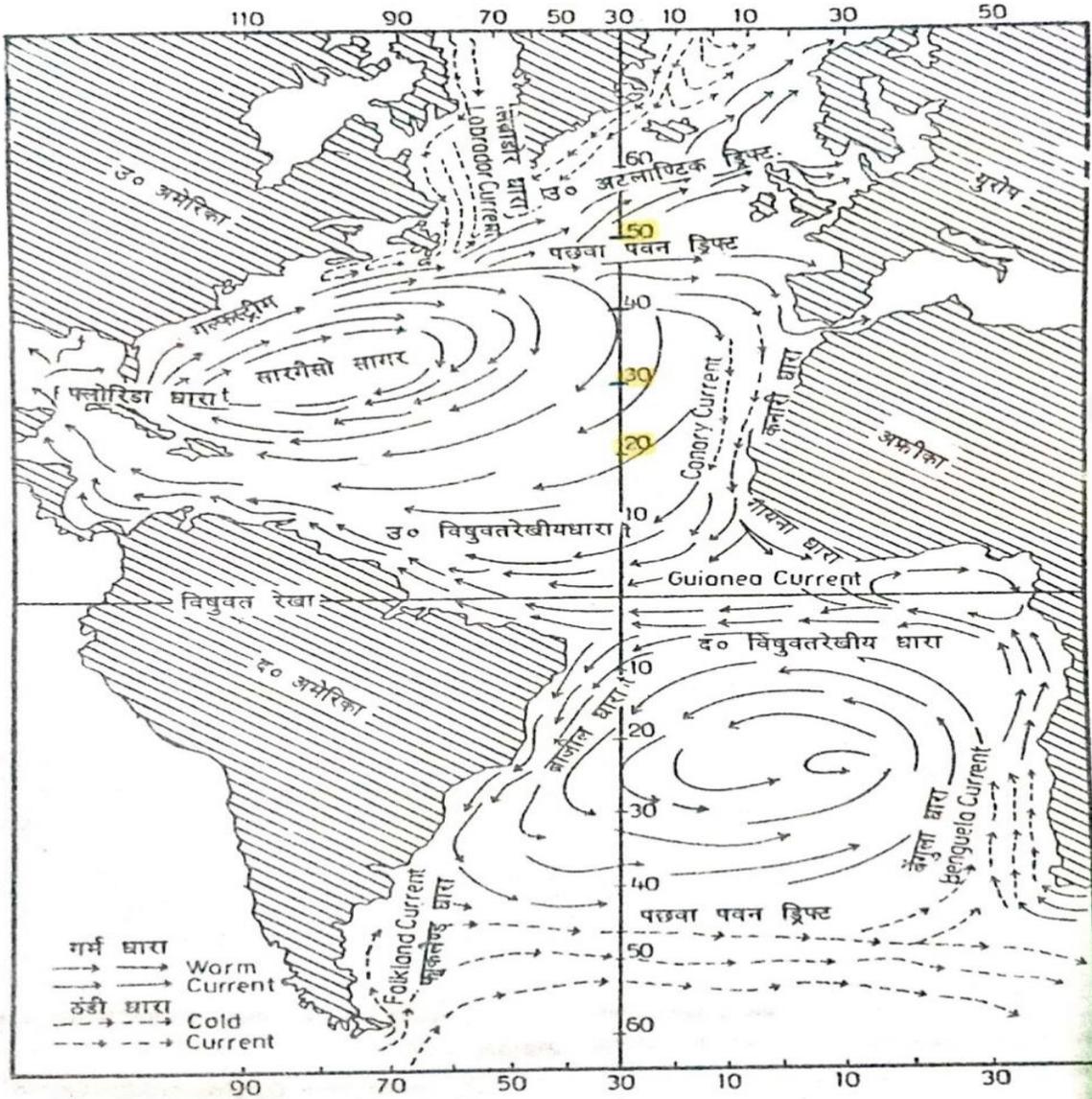
लैब्राडोर की ठण्डी धारा Labrador Cold Current- ग्रीनलैण्ड के पश्चिमी तट पर बेफिन की खाड़ी से निकलकर लैब्राडोर पठार के सहारे-सहारे बहती हुई न्यूफाउलैंड गल्फस्ट्रीम में मिल जाती है। यह धारा सागरों से आने के कारण ठण्डी होती है। न्यूफाउण्डलैण्ड के निकट ठण्डे और गरम जल मिलने के कारण घना कुहरा छाया रहता है। मछलियों के विकास हेतु यहाँ आदर्श दशाएं मिलती हैं।

सारगौसा सागर, उत्तरी अटलांटिक महासागर का मध्यवर्ती भाग वृत्ताकार धारा प्रवाह के कारण शांत व प्रायः स्थिर रहता है। यहाँ कूड़ा-करकट एकत्रित होने पर उस पर सारगौसा नामक घास उगने से ही इसे सारगौसा सागर कहते हैं।

दक्षिणी विषुवत रेखीय गर्म धारा South Equatorial Current- यह धारा दक्षिण-पूर्वी सन्मार्गी.हवाओं के प्रवाह के कारण पश्चिमी अफ्रीका से प्रारम्भ होकर दक्षिणी अमरीका के पूर्वी तट बहती है। सेण्ट राक्स द्वीप से टकराने के बाद यह दो भागों में बंट जाती है प्रथम शाखा उत्तरी विषुवत् रेखीय धारा में मिल जाती है तथा दूसरी पूर्वी ब्राजील तट के सहारे गुजरती हुई आगे बढ़ जाती है।

ब्राजील की गर्म धारा Brazilian Warm Current- दक्षिणी विषुवत रेखीय धारा दक्षिण-अमरीका के सेण्ट राक दीप से टकराकर दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है। इसकी एक शाखा तट के सहारे उत्तर की ओर चली जाती है। यह उत्तरी ब्राजील धारा (north Brazilian Current) कहलाती है जो आगे चलकर खाड़ी की धारा में मिल जाती है। दूसरी धारा ब्राजील के तट के सहारे दक्षिण की ओर चली जाती है। यह दक्षिणी ब्राजील की धारा (South Brazilian Current)

कहलाती है। आगे चलकर 40° द. अक्षांश के समीप फाकलैण्ड की ठण्डी धारा से टकराकर यह दक्षिणी अन्ध महासागर के प्रवाह के रूप में पश्चिम में पूर्व की ओर बहने लगती है।



चित्र 27.1-अटलांटिक महासागर की धाराएं ।

फाकलैण्ड की ठण्डी धारा Falkland Cold Current- अण्टार्कटिक महासागर में पश्चिम से पूर्व की ओर चलने वाली ठण्डी धारा प्रवाह (drift) के दक्षिणी अमरीका के केपहार्न से टकराने से उसकी एक शाखा उसके पूर्वी किनारे के सहारे उत्तर की ओर चलने लगती है। यह फाकलैण्ड धारा कहलाती है।

बेंगुला की ठण्डी धारा Banguela Cold Current- दक्षिणी अटलांटिक प्रवाह दक्षिण अफ्रीका के पश्चिमी तट से टकराकर उसके सहारे उतर की ओर मुड़ जाती है। इसे ही बेन्गुला की ठण्डी धारा कहा जाता है।

अण्टार्कटिक प्रवाह Antarctic Drift- यह प्रवाह दक्षिणी ध्रुव सागर में तीव्र पछुआ पवनों के कारण पश्चिम से पूर्व की ओर चलता है। इसे पछुआ पवनों का प्रवाह भी कहा जाता है। यह एक ठण्डा प्रवाह है और यहाँ स्थल के अभाव में बड़े वेग से सम्पूर्ण पृथ्वी की प्रक्रिया करता हुआ वहता है।

विपरीत भूमध्यरेखीय जलधारा Counter Equatorial Current- उत्तरी व दक्षिणी विषुवत रेखीय जलधाराएँ ज दक्षिणी अमरीका के पूर्वी तट पर पहुंचती हैं तो तट से टकराकर इन धाराओं का कुछ जल पुनः विषुवत् रेखा के शान्त खण्ड से होकर अफ्रीका के गिनी तट की ओर आता है। दोनों धाराओं के बीच जल के इस उल्टे बहाव को ही विपरीत विषुवत रेखीय जलधारा कहते हैं। इसकी उत्पत्ति में पृथ्वी की परिभ्रमण गति एवं पूर्ववर्ती भाग में जल की कमी की पुनः आपूर्ति का ही विशेष कारण निहित रहे हैं।